International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(2): 01-04

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(2): 01-04
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-12-2023
Accepted: 05-01-2024

डॉ. हेमराज सैनी
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
बून्दी राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. हेमराज सैनी
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कन्या महाविद्यालय, बून्दी
(राज•)

संस्कृत बाल साहित्य में काव्य बिंब

डॉ. हेमराज सैनी

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2024.v10.i2a.2320

सारांश
साहित्य में भाव संप्रेषण एवं पाठकों के मानस पटल पर ग्राफिक्स, इमेज, चित्र अथवा बिंब को मूर्त रूप देने हेतु लेखक काव्य में सांकेतिक शब्दों का प्रयोग करता है। अतः रचनाकार जिन शब्दों का प्रयोग कर रहा है उनमें वह विवक्षित भाव को सामाजिक पाठकों तक पहुंचाने में समर्थ होना चाहिए। आधुनिक संस्कृत साहित्य में नवीन विधा के रूप में आविर्भूत बाल साहित्य में कवि का मुख्य उद्देश्य बालपाठकों को बिंबात्मक शब्दों के माध्यम से भाषा एवं साहित्य का ज्ञान करवाना है। बाल साहित्य में शब्द यथार्थ बोध पर आधारित है। किंतु कवि यहां कल्पना द्वारा चित्रात्मक बिंबों का भी बाल पाठकों के मानस पटल पर प्रत्यक्षीकरण करने में समर्थ होता है।

कूटशब्दः बिंब, बाल–साहित्य, कल्पना, इमेज,काव्य बिंब, चित्र काव्य

प्रस्तावना
काव्य में वर्ण्य–वस्तु या भाव के प्रत्यक्षीकरण को पाश्चात्य समीक्षाकों ने बिंब की संज्ञा दी है।इसी तरह संस्कृतकाव्यों में बिंब के लिए' प्रतिमूर्ति' एवं हिन्दी में 'झलक 'शब्द बिंब के लिए प्रयुक्त हुआ है। काव्य बिंब में ऐन्द्रीय प्रत्यक्ष और बौद्धिक ज्ञान दोनों एकत्रित हो जाते हैं। पाश्चात्य समीक्षक बिंब के लिए 'इमेज' शब्द का प्रयोग करते हैं काव्य में इमेज अथवा प्रतिमूर्ति का अर्थ अनुकरण, प्रतिलिपि, समानता, प्रतिमा, चित्र, छाया, धारणा, विचार, सादृश्य, आभास दिखाई देना आदि है, जैसा कि ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में उल्लेखित है–

> "image mens imitation, copy, likeness, statue, picture, Phantom, conception, thought, idea, similitude, semblance, appearness, shadow."[1]

आक्सफोर्ड डिक्शनरी में दिए गए पेरा के अनुसार क्रिया के द्वारा मस्तिष्क में किसी वस्तु का चित्र सा बन जाना, कोई विचार या धारणा, वस्तु का प्रत्यक्षीकरण, दृश्य का चित्रात्मक वर्णन, उपमा,रुपक या कोई अलंकार का निरुपण काव्य बिंब का उदाहरण है। आधुनिक काव्यशास्त्रीय आचार्य रासबिहारी द्विवेदी द्वारा कथित मंजुलता प्रसंग "आधुनिक संस्कृत साहित्य की परिक्रमा "ग्रंथ में आंग्ल भाषा के इमेज या मोनो को परिभाषित किया है –"

> लघुबिंबात्मकं काव्यं यत्पादैझरादिना।
> रचितं आंग्लभाषायां संस्कृते माघवादिभिः।।
> लघुबिंबात्मके काव्ये चित्रमुद्भावितं परम्।
> प्रत्यक्षीक्रियते सद्यो भावकेंद्रियवृत्तिभिः।।
> यत्रानुव्याहृतम् वृत्तं बौद्धिकं भावनामयमं।
> कविनान्नुतनिभूतं प्रत्यक्षमिव भासते"।।[2]

अर्थात काव्य में बिंब विषय के अनुकूल होना आवश्यक है, उसके अभाव में काव्य में अलंकार नहीं होने पर भी जो काव्य के जो विशिष्ट सोपान है, वह उसमें विद्यमान रहते हैं। जैसे की वस्तु का प्रत्यक्षीकरण, लयबद्धता,शब्द क्रम, शब्द– लाघवता,सर्वगम्य भाषा, छंद परंपरा तथा विषय की इंद्रियग्राहीता । आधुनिक संस्कृत बाल साहित्य की नवीन विधाओं यथा बालकाव्य, बालनाटक,बालकथा, बालोपपन्यास, प्रहेलिका इत्यादि में वस्तु अथवा भाव के प्रत्यक्षीकरण हेतु कवि व्याकरण रहित भाषा

शैली, लघु लघु शब्द क्रम, बालोऽनुकूल छंद, अलंकार तथा शब्दार्थ का सम्यक् प्रयोग करता हुआ परिलक्षित होता है । प्लेटो ने दार्शनिक दृष्टि से विवेचन करते हुए संसार की सभी कृतियों को वास्तविक पदार्थ का प्रतिबिम्ब स्वीकार किया है। सत्य रूप मूल होता है। कारीगर अनुकरण द्वारा उसकी प्रति छवि भी तैयार करता है। कलाकार उसका अनुकरण करता है, जो वास्तविकता से बहुत दूर जा पढ़ता है।[3] आचार्य बनमालीविश्वाल ने काव्य तत्वों से समन्वित एक–बिंबात्मक लघुबिंबकाव्य काव्य का लक्षण प्रतिपादित करते हुए निर्दिष्ट किया है यथा–'

एकं बिंबं समाश्रित्य काव्यं विरच्यते यतः।
एक–बिंबात्मकं काव्यं साहित्ये समकालिके।।
लघुबिंबं समाधृत्य भावधारासु कासुचित्।
भिन्नछायासु तत् काव्यं लघुबिंबंञ्च कथ्यते।।
विश्वस्य सर्वभाषासु विधैषा तु प्रसिद्धयति।
तत्काव्यमाङग्लभाषायां मोनो इमेजिति स्मृतम्।।
नव–बिंब–प्रतिकानां मिथकानां विशेषतः।
बिंबपूर्णा विनियोगोऽप्यत्र व्यञ्जनानां भवेत् पुनः।।
एतेषामुपयोगाच्च शब्दानां लाघवं स्वतः।
बलं यत्रार्थसौन्दर्ये प्रदीयते च सर्वथा।।[4]

वस्तुतः काव्य में प्रभावशाली शब्दार्थ (शब्द–अर्थ) ही बिंब का निर्माण करते हैं। प्रतीकों की अपेक्षा यह बिंब इन्द्रिय संवेदनात्मक होते हैं। इनकी अनुभूति अथवा आत्मप्रत्यक्षीकरण चाक्षुष –श्रव्य–स्पर्श–आस्वादन एवं घ्राणेंद्रियो काव्य के माध्यम से होती है।काव्य में इन शब्दार्थों के माध्यम से ही काव्य या बालकविता में बिंब का उद्भव होता है।बिंब प्राकट्य अपने आप में कविता या काव्य का प्राण है। काव्यशास्त्रीयों का मत है कि लक्ष्य और लक्षण दोनों के सम्मिश्रण से ही काव्यों का निर्माण होता है। महर्षि पाणिनि ने अपने समकालिक प्रयोगों को देखकर ही अष्टाध्यायी की रचना की थी। आचार्य आनंदवर्धन ने भी ध्वनि सिद्धांत की पुष्टि के लिए रामायण और महाभारत सदृश महाकाव्यों में उपलब्ध उदाहरणों को ही प्रमाण स्वरूप उपस्थित किया है, यथा–

"अथ च रामायण– महाभारत प्रभृतिनि लक्ष्ये सर्वत्र प्रसिद्धव्यवहारं लक्षयतां सहृदयानामानन्दो मनसि लभतां प्रतिष्ठामिति प्रकाश्यते।"[5]

अतः काव्य बिंब के काव्यशास्त्रीय विवेचन से पूर्व अर्वाचीन साहित्य की नवीन विद्या के रूप में आविर्भूत बाल साहित्य की भिन्न भिन्न काव्य विधाओं में परिलक्षित काव्य बिंबों का स्थालीपुलाकन्याय से यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। काव्य 'शाब्द –व्यापार' का परिणाम है। शब्द के श्रवण एवं पाठन से ही यह कार्य संभव होता है। इसीलिए काव्यशास्त्रीयों ने एकमत से काव्य के श्रव्य एवं दृश्य दो प्रकार स्वीकार किए हैं। सहृदय बाल पाठकों के हृदय में होने वाला काव्यार्थ बिंबन ही प्रत्यक्षकल्प संवेदन है। बालकाव्यों में प्रयुक्त छंद अलंकार माधुर्यादि गुणों के द्वारा बाल सामाजिकों के हृदय में उद्बुद्ध भावों का काव्य में प्रस्तुत भाव से साधारणीकरण होने पर रसानुभूति से बालकाव्य में बिंब की निष्पत्ति होती है। भावों के आनंदघन और प्रकाशात्मक होने तथा उनका उदय होने पर अंतःकरण में स्थित काम–क्रोधादि षड् –दोषों की अवस्थाओं का लॉक हो जाता है। साथ ही लौकिक कटुता, घृणा, शाओक, आनंद, सांस, डर, भय,पलायन स्मित आदि भाव भी प्रवाहित हो जाते हैं।यथा–

'अज्ञानतमोनिखिलं दूरीकुरुस्व शारदे ।
जाड्यं धियो द्रुतं मे दूरीकुरुस्व शारदे।।
त्वां शुद्धचेतसाहं बालस्तव स्मरामि।
मृदुभावरम्यपुष्पैर्नित्यं सुपूजयामि।।
लोकै प्रतीयते मे निःसारजीवनं।
वीणारवैःप्रभूतं सफलीकुरुस्व शारदे।।[6]

शब्दों का प्रयोग भावों के सम्प्रेषण में होता है। अतः मनुष्य जिन शब्दों का प्रयोग करता है,वह शब्द सोद्देश्य होते हैं। यदि शब्द उद्दिष्ठ आशय का अवबोध करने में समर्थ है तो उस शब्द को शब्द मर्मज्ञ सार्थक कहेंगे, अन्यथा निरर्थक। आचार्य भतृहरि ने शब्द की महत्ता प्रतिपादित करते हुए उल्लेख किया है कि –

'अभ्यासात् प्रतिमाहेतुःशब्दःसर्वोपरैःस्मृतः।
बालानां च तिरश्चां च यथार्थप्रतिपादने'।।[7]

आचार्य वासुदेव द्विवेदी ने शब्दों की अनुरणात्मकता का सुंदर प्रयोग किया है–

''निपतति जम्बूःटप् टप्, बालःखादति गप् गप।
वायुःप्रवहति हर् हर्, पत्रं निपतति खर् खर्।।[8]

यहां पत् धातु से टपकना, अर्थ खाद धातु से खाना, वह धातु से पवन प्रवाह, तथा पत् धातु से पत्तों के गिरने के प्रत्यक्षीकरण की सुंदर श्रव्यात्मक भावाभिव्यक्ति हुई है। यहां कवि के ऐन्द्रीय भाव से पाठक,श्रोता या दृष्टा को प्रत्यक्षीकरण हो रहा है। डॉ केशव चंद्र दास प्रणीत 'एकदा 'कथासंग्रह में 'एकदा' शब्द बालकों के मानस पटल पर हर क्षण जिज्ञासा, धारणा, चित्र, सादृश्यता, का स्थाई भाव जागृत करता रहता है। डॉक्टर रामकिशोर मिश्रा ने ''बालतरंगिणी''काव्य में 'बालचरितम 'शीर्षक से स्वयं के शिशुवत् बालक राजेश की जन्म से 12 वर्षपर्यंत की शारीरिक एवं मानसिक चेष्टाओं को प्रत्यक्ष तरीके से अवलोकन किया गया है। डॉ हर्षदेव माधव ने कहा है कि''सप्तवर्णः चित्रपतङगः'' लघुकथा के अध्ययन से मन भी शिशु सदृश्य हो जाता है यह मानो मुझे पुनः शैशवावस्था की ओर ले जा रही है यथा–
''एकदा चत्वारः बालाः वने भ्रमन्ति स्म। तत्र ते एकं सुन्दरं जलाशयम् अपश्यन्। सः जलाशयः विविध वर्ण पद्मपुष्पैः पूर्णः आसीत्। बालाः नितान्तम् आनन्दिता अभवन्।[9] वस्तुतः कथाकार काव्य में पाठकों के मानस पटल पर कल्पनाशीलता का प्रवाह सर्वदा बनाए रखने के लिए चित्रात्मक शब्दों का प्रयोग करते हुए ऐसी इमेज या स्मृति बिंब की कल्पना करता है कि बालक नूतन जगत का दर्शन करने को आतुर हो जाते है। संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में उल्लेखित लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्तियों का कलपनात्मक प्रयोग सामान्य रुप से मिश्रित काव्य बिंब का ही समर्थन है। संस्कृत बाल साहित्य के युवा कवि ऋषिराज जानी द्वारा लक्षणा युक्त बाल प्रहेलिका के माध्यम से 'मूषक' का चित्रात्मक भाव या कल्पनात्माक बिंब, इमेज बाल मस्तिष्क पर चित्रित करने का सफल प्रयोग किया है, यथा–

''बिले वसामि गेहेषू,
चूं–चूं ध्वनिं करोम्यहम्।
कर्तयामि च वस्त्राणि,
गणाधिपस्य वाहनम्।।''[10]

वस्तुतः काव्य के शब्दात्मक भावों में निहित रागवृत्ति ही कवि के मानस संवेदन या मनोवेग, जिसके स्पर्श के बिना वह भाव सर्वथा निर्जीव और निष्प्राण प्रतीत होगा।कवि की रागात्मक वृत्ति के कारण ही भौतिक एवं प्राकृतिक जगत का अचेतन पदार्थ भी काव्य का विषय बनकर अबोध एवं सहृदय बाल पाठकों को प्रत्यक्ष प्रतीति के साथ ही भावोद्वेलित कर पाता है। बाल साहित्यकार की रस तत्व युक्त रागात्मक भावना ही काव्य में निर्जीव तत्व को सजीव तथा सजीव तत्व को निर्जीव बनाने में समर्थ होती है इसके साथ ही कवि की रागात्मक वृत्ति ही बालकाव्यों में रस तत्व को उत्पन्न

करवाने में समर्थ है। बाल साहित्य की विविध विधाओं यथा –बाल काव्य, बाल कथा, बाल नाटक इत्यादि में काव्य बिंब तभी संभव है जब कवि अपने सूक्ष्म निरीक्षण से वर्ण्य वस्तुओं के अंग– प्रत्यंग, वर्ण, आकृति तथा उसके आसपास की परिस्थिति का परस्पर संश्लिष्ट दृश्यात्मक अथवा अनुभवात्मक विवरण प्रस्तुत करें।बाल साहित्यकारों ने काव्यों में बिंब सदृश चित्रात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया है। चित्रात्मक भाषा का प्रत्येक पद भावगर्भित होता है। चित्र भाषा ही साहित्य में वाचिक, लाक्षणिक एवं व्यंजक शब्दों द्वारा काव्य बिम्बों की प्रतीति में समर्थ होती है। भाषा के साथ ही कवि की बाल संवेदनाएं, उपमेय –उपमान, शाब्दिक प्रतीक, भावातीत, विकीर्णता, संकुलता एवं तात्कालिकता आदि भी काव्य निर्माण में प्रयुक्त शाब्दिक भाव होते हैं। वस्तुतः काव्य में प्रयुक्त साङ्केतिक शब्द ही है जो एक दीर्घ परंपरा में वैशिष्ट्य अर्थ में रुढ हो चूकें हैं। डॉ केशवचंद्र दास ''पताका''बालोपन्यास में 'पताका 'शब्द पाठकों के मानस पटल पर स्वतंत्रता दिवस के भाव को रेखांकित करता है, यथा–

'श्रद्धेयाःअन्तेवासिनः। अद्य पुण्यदिवसः। अस्मिन् दिवसे वयं मुक्ताः। दिवसेऽस्मिन च अस्माकं मुक्तिसमरःसमाप्तः। मुक्तिसमरस्य प्रतीकम् इयं पताका। पताकाकाले सर्वे वयं समानाः। सर्वे आत्मीयाः। पताकायाः मर्यादा अस्माकं सर्वस्वम्।'[11]

उल्लेखित संदर्भ में स्वतंत्रता दिवस को पुण्यदिवस,संकल्पदिवस एवं प्रतिज्ञादिवस के तात्कालिक अर्थ में संबोधित किया है।कवि आगे 'पताका'शीर्षक से 'ध्वजा'शब्द को रेखांकित करता है –

'पताकायां विभिन्ननिर्देशो वर्तते। यथा न्यायालये सर्वदा अस्माकं राष्ट्रीय–पताका उड्डीयते। किन्तु यदा मृत्युदण्डविधानं भवति तदा कृष्णपताका उड्डीयते। एवम्। अन्यत्र नानानिर्देशाःसन्ति।पताका तु प्रतीकमात्रम्। कृष्णपताका अशुभस्य। रक्तपताका विषदः।हरितपताका आरम्भस्य..... गतिशीलस्य च ।'[12]

सत्य है कि चित्रकाव्य के दर्शन से बाल हृदयों को आनन्द की अवाप्ति होती है। कवि अप्पयदीक्षित ने चित्रकाव्य के पांच तत्व स्वीकार किए हैं –कल्पना, विचार, भावना, शैली एवं तोष या संतोष।[13]

इसमें कल्पना तत्व बालकों में प्रत्यक्ष होता है। कल्पना कवि की नई सोच है। जिसके द्वारा वह पुरानी बात को नवीन रूप में प्रतिपादित करता है। मनुष्य नवीनता का उपासक है। नवीनता से वह चमत्कार का अनुभव करता है। प्राचीन काव्यशास्त्री विद्वान कल्पना के लिए संभावना, उद्भावना, उत्प्रेक्षण,उत्पादन, प्रौढोक्ति, सदृश शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। यथा–'

प्रत्यक्षं कल्पनायोढं सतोऽर्थादिति केचन।
कल्पनां नाम जात्यादियोजनां प्रतिजानते।।'[14]

संस्कृत बालसाहित्य में कल्पनात्मक बिंबो का सफल प्रयोग परिलक्षित होता है। डॉ हर्षदेव माधव 'सप्तवर्ण चित्रपतंग 'लघुकथा काव्य के परायणोपरांत संभावना प्रकट करते हैं कि यह लघुकथा काव्य मेरे मानस पटल को शैशवावस्था की ओर ले जातीं हैं। इसके श्रवण मात्र से ही मेरा मन शिशु सदृश हो जाता है। कवि कभी कल्पना करता है कि वह जलाशय विविध वर्णधारी पुष्पों से आच्छादित है ।वर्णधारी पुष्पों को देखकर बालक प्रफुल्लित हो जाते हैं। अचानक ही किसी श्वेत वर्ण वाले गजराज का वहां आगमन होता है। आनंद मग्न बालक यह देख कर डर जाते हैं, किंतु हाथी द्वारा बालकों को यह कहने पर कि आप मुझसे डरो मत, क्षण भर में ही वह परस्पर मित्र बन जाते हैं । आगे कभी कल्पना करता है कि वह बालक गजराज की पीठ पर सवार होकर संपूर्ण वन का अवलोकन करते हैं । वन्य मार्ग में उनको विविध वर्णधारी पतंगा (तितली) मिलती हैं, वह तितली पिपलीका के समान लग रही थी। वह चित्र पतंग देखने में अत्यंत आकर्षक थी । तब बालक उत्साह में पृथ्वी का मनोहारी वर्णन करते हैं, यथा–'एकदा चत्वारःबाला वने भ्रमन्ति स्म। तत्र ते एकं सुन्दरं जलाशयम् अपश्यन्। सः जलाशयः विविध वर्ण पद्मपुष्पैः पूर्णः आसीत्। बालाः नितान्तम् आनन्दिता अभवन्।[15]

वस्तुतः कथाकार काव्य में कल्पनाशीलता का प्रवाह सर्वदा बनाए रखने के लिए जिज्ञासामूलक कल्पनात्मक शब्दों का प्रयोग करता है, जैसे एकदा एकवारं, एकासीत् राज्ञी, एकश्चासीत् शुकः, आसीदेकः राजा, एकासीत् परी, इत्यादि संभावना युक्त काव्यबिंब शब्द बालकों के मन में नवीन दृश्य उपस्थित करते हैं। आधुनिक बालकाव्यों में दृश्यात्मक वस्तुओं के विधान में भी बिंब निर्माण की सृष्टि होती है। उपमान– उपमा, उत्प्रेक्षा अथवा संभावना, आश्चर्य अचरज, महाता, अद्भुत, अनुग्रह आदि के वर्णन में भी बिंब का सफल प्रयोग परिलक्षित होता है, यथा–

'अनुदिनं कदलीव विवर्धते,
तुहिनाबिन्दुततीव च शोभते।
परिणतिं समुपेत्य विनश्यति,
ननु समूलमियं खलमित्रता '।।[16]

यहां पूर्वार्ध उपमेय पक्ष है। उत्तरार्ध उपमान है। खल मित्रता उपमेय है।कदली वृक्ष उपमान है । यहां दर्जनों के मित्रता का वर्णन किया गया है। संस्कृत बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा– कथासाहित्य, एकांकी, उपन्यास, बालकविता इत्यादि में प्राचीन संस्कृत काव्य का अनुकरण ग्राह्य है किंतु अनुकरण को नकल नहीं मान सकते हैं। जैसा कि प्रो. राजेन्द्र मिश्र प्रणीत 'अभिनवपंचतंत्रम् बालकाव्य में पं विष्णु शर्मा प्रणीत 'पंचतंत्रम् की तंत्रात्मक शैली का अनुसरण किया गया है किंतु काव्यात्मक कथानक पंचतंत्र से ग्रहण नहीं करके कथाओं के स्थान, घटना अथवा कथानक स्वयं कवि द्वारा प्रत्यक्षगोचर है। अतः संस्कृत बाल साहित्य में भावसाम्य तथा मौलिकता प्रत्यक्ष होती है। यह सत्य है कि काव्य में आत्मसदृश विद्यमान 'रस' तत्व आनन्द का उत्कर्षधायक होता है। यह काव्यात्मक आनन्द शास्त्रों में तीन प्रकार का स्वीकार किया गया है– अलौकिकानन्द, काव्यानन्द एवं ब्रह्मानंद। वस्तुतः काव्यानन्द की सत्ता ही साहित्य में उपलब्ध होती है। बालकाव्यों के अनुशीलन अथवा श्रवण से भी बालकों को काव्यानन्द की प्राप्ति होती है। जैसा कि अग्नि पुराण में उल्लेखित है–

''वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्।
वचनविन्यास चमत्कारपूर्णे
सत्यपि काव्यस्यात्मा तु रस एव ।
स चानन्दमय।''।(अग्निपुराण, 37/33)

अर्थात यह काव्यानन्द रस से युक्त होता है। यद्यपि बालकाव्यों की भाषा शैली व्यंग्यप्रदान ना होकर अभिधेय होती है, फिर भी बालकों के मन में सत्व गुण को बढ़ाने वाले रस सर्वत्र परिलक्षित होते हैं। यह रस तत्व बालसाहित्य में प्रयुक्त होकर बालकों के हास्य एवं आनंद अवाप्ति में सहायक होते हैं। संस्कृत बाल साहित्य में बालकों के मनोऽनुकूल हास्य, शांत, वात्सल्य, भक्ति एवं अद्भुत रसों का बिंबात्मक रुप में प्रयोग प्रत्यक्षदर्शी है। कविराज विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में सामाजिक पात्रों की विकृत बनावट,विकृत वाक, वेषभूषा एवं चेष्टादि अभिनय में हास्य रस की सत्ता प्रतिष्ठापित की है। यथा–

विकृताकारवाग्चेष्टादेःकुहकाद्भवेत।
हास्यो हास स्थायिभावः श्वेःप्रमथदैवतः।।

हास्य रस का स्थायी भाव 'हास 'है। यथा डॉ के वरलक्ष्मी द्वारा शिशुस्वान्तम् नाटक में वर्णित 'विनायकः दृष्टः एकांकी में बुद्धिप्रदाता गणेश जी के हास्यास्पद अभिनय में बालकों की चपलता, रुदन, भुभूक्षा इत्यादि मूर्त दशाओं का सुंदर वर्णन किया गया है– "अयि बुभुक्षा जायते। इति रुदन् हस्तं प्रसार्य सदैन्यं याचते स्म सः। तं

बालं दृष्ट्वा दयालुः संजातः श्रीनिवासः सजलनेत्रः जातः। अनुक्षणंकोशस्थानि विंशति रुप्यकाणि निष्कास्य..... पार्श्वस्थाय अल्पाहारस्वामिने दत्त्वा अवदत् यत् ..... भो ! एनं बालं भोजयतु।"[17] इसी तरह अद्भुत रस युक्त 'जिज्ञासा' या विस्मय में भी बाल साहित्य में जिज्ञासात्मक बिंब का निर्देश करता है। बाल साहित्य में कौतुक अलंकार से युक्त गद्यपद्य में सर्वत्र अद्भुत रस की छठा परिरक्षित होती है। जगत् में विद्यमान अलौकिक परिदृश्य इसका आलंबन विभाव, अलौकिक वस्तु के गुणों का वर्णन उद्दीपन विभाव, बालकों के मन में उत्पन्न स्वेद रोमांच आदि इसके अनुभाव है तथा आवेग, हर्ष, भ्रांति, प्रसन्नता आदि व्यभिचारी भाव होते हैं। यथा–

न श्रेयसे भवत्येव अपरीक्षितकारकम्।
पुरोहितं तिरस्कृत्य यथाऽवाप नृपो भवम् ।।[18]

यहां बालकों के मन में आचार्य द्वारा कथित प्रश्न का उत्तर जानने की अद्भुत जिज्ञासा है ।अतः अद्भुत रस है। इसी तरह बालकाव्यों में बालकों के मन में कौतुक, अनुकरण, इमेज, कल्पना इत्यादि भावों का प्रत्यक्षीकरण करने हेतु प्रेमा, आह्लाद, विषाद, बिभिषिका, व्यंग्य, जीजीविषा, अहंकार, स्मृति, छाया, जाति, अतिशय, विरोधम्, विषमम्, द्वंदम्, तानवम्, दीपक अनुप्रास तथा लय आदि अलंकारों की छठा सर्वत्र बिखरी हुई है।

निष्कर्ष

सारांशतया संस्कृत बाल साहित्य में काव्य बिंब के संबंध में प्रस्तुत सभी पक्षों एवं आयामों को मेरी अकिंचन मति के द्वारा सीमित शब्दों एवं परिधि में लिपिबद्ध करना 'उडुपेनसागरतरणसदृश' दुष्कर कार्य है। अतः विद्वज्जनों से करबद्ध निवेदन है कि काव्य बिंब के आधुनिक संस्कृत बाल साहित्य में प्रयुक्त शोधकार्य के विवेचन को 'स्थालीपुलाकन्याय' के समान आंशिक ही समझा जाए, समग्र नहीं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. The OXford English dictionary-40/15, Page -05
2. शर्मा मंजुलता, आधुनिक संस्कृत साहित्य की परिक्रमा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2011 ई., पृ०109।
3. डॉ नगेंद्र, काव्य बिंब, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1997ई.
4. बनमालीविश्वाल, समकालिक साहित्य की नूतनप्रवृत्तिया, न्यु भारतीय बूक काफ्रेन्स 2020
5. आनन्दवर्धन, ध्वन्यालोक, चौखम्भा संस्कृत सीरीज वाराणसी, 1940, पृ. 38।
6. चौबे डॉ संजय कुमार, चित्वा तृणं तृणम्, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 24।
7. भतृहरि आचार्य, सुब्रह्मणाय के., वाक्यपदीयम्, 2/117, डेक्कन कालेज, पूना।
8. द्विवेदी आचार्य वासुदेव, बालकवितावली, प्रथम भाग (मंत्री कविता),
9. मिश्र डॉ संपदानन्द, सप्तवर्णः चित्रपतङ्ग्, प्राक्कथन भाग से उद्धृत।
10. जानी ऋषिराज, कपिः कूर्दते शाखायाम्, खुश्बू प्रकाशन, अहमदाबाद, 2016
11. दास डॉ केशवचंद्र, पताका (बालोपन्यास), लोकभाषा प्रचार समिति, शारदावलि (पुरी), 1990 ई., पृ.98।
12. दास डॉ केशवचंद्र, पताका (बालोपन्यास), लोकभाषा प्रचार समिति, शारदावलि (पुरी), 1990 ई., पृ.99।
13. अप्पयदीक्षित, चित्रमीमांसा, भूमिका भाग, वाणीविहार, वाराणसी, पृ.127।
14. हेमचंद्र आचार्य, काव्यानुशासन, विवेक भाग 1, महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, 6।
15. मिश्र डॉ संपदानन्द सप्तवर्णः चित्रपतङ्ग् पृ. 1।
16. मिश्र प्रो. अभिराजराजेन्द्र, अभिनवपंचतत्वम्, वैजयंत प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008 ई., पृ.12।
17. वरलक्ष्मी डॉ के, शिशुस्वान्तम्, संस्कृत भारती, गोवा 2016 ई., पृ 24–25
18. मिश्र प्रोफेसर, अभिनवपंचतंत्रम्, वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, 2008ई., पृ 83।